पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

वर्ष – 2025-26

पतंजलि विश्वविद्यालय
UNIVERSITY OF PATANJALI
Patanjali Yog Peeth, Roorkee – Haridwar Road, Haridwar, Uttarakhand 249405

Faculty of Humanities and Ancient Studies

Department of Philosophy

Session 2025-26

वैदिक डिप्लोमा

Semester I

S. No.	Course Code	Course Title	Credit			
			L	T	P	Total Credits
1	VDPH-101	वेद परिचय – I	1	1	4	4
2	VDPH-102	वेदाङ्ग परिचय – I	3	1	0	4
3	VDPH-103	उपनिषद् परिचय – I	2	1	2	4
4	VDPH-104	वैदिक दर्शन परिचय	2	1	2	4
5	VDPH-105	वैदिक संस्कृति परिचय – I	2	1	2	4
					Total Credits	20

Semester II

S. No.	Course Code	Course Title	Credit			
			L	T	P	Total Credits
1	VDPH-201	वेद परिचय – II	1	1	4	4
2	VDPH-202	वेदाङ्ग परिचय – II	3	1	0	4
3	VDPH-203	उपनिषद् परिचय – II	2	1	2	4
4	VDPH-204	वैदिकेतर दर्शन परिचय	3	1	0	4
5	VDPH-205	वैदिक संस्कृति परिचय – II	3	1	0	4
					Total Credits	20
					Grand Total	40

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-101 - वेद परिचय – I

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- चारों वेदों के चयनित मन्त्रों का स्वर सहित उच्चारण कराना।
- वैदिक साहित्य के माध्यम से विविध विद्याओं को अवगत कराना।
- वेद मन्त्रों के स्वर व्यत्यय से अर्थ व्यत्यय का बोध कराना।
- लुप्त प्राय स्वर विद्या का बोध कराना।
- दस प्रकार के वेद पाठ विधि का बोध कराना।

इकाई 1 – ऋग्वेद के चयनित मन्त्र ()

इकाई 2 – यजुर्वेद के चयनित मन्त्र ()

इकाई 3 – सामवेद के चयनित मन्त्र ()

इकाई 4 – अथर्ववेद के चयनित मन्त्र ()

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे,

- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के उल्लिखित मन्त्रों का सस्वर उच्चारण करना।
- विविध मन्त्रों का अर्थ का विश्लेषण करना।
- वैदिक साहित्य के माध्यम से विविध विद्याओं का बोध।
- प्रामाणिक वेदवेत्ता बनकर वांछित अर्थार्जन में सक्षम होना।
- वेद मन्त्रों के स्वर व्यत्यय से अर्थ व्यत्यय का बोध।
- विविध प्रकार के वेद पाठ विधि का प्रयोग।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: - वेदामृत, डॉ० साध्वी देवप्रिया जी, दिव्य प्रकशन, हरिद्वर

सहायक ग्रन्थ: - ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-102 - वेदाङ्ग परिचय – I

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- विविध शिक्षाओं का परिचय के साथ वर्णोच्चारण का बोध कराना।
- कल्पसूत्रों के भेद सहित वेदोक्त विहित कर्म एवं वेदमन्त्रों का विनियोगादि को समझाना।
- व्याकरण परिचय के माध्यम से वेदों में वर्णित प्रत्यय, सन्धि आदि को अवगत कराना।
- निरुक्त के माध्यम से विविध वैदिक पारिभाषिक शब्दों के निर्वचन का बोध कराना।

इकाई 1 – शिक्षा परिचय

इकाई 2 – कल्प परिचय

इकाई 3 – व्याकरण परिचय

इकाई 4 – निरुक्त परिचय

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे,

- शिक्षा (वेदाङ्ग) के अनुसार सभी वर्णों का उच्चारण करना।
- कल्प के माध्यम से निर्दिष्ट मन्त्रों का विनियोग करना।
- वेद को समझने में व्याकरण का स्थान एवं महत्व को समझाना।
- विभिन्न वैदिक शब्दों का निर्वचन बताना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: - वेदाङ्ग-परिचय, आचार्य आनन्दप्रकाश, आर्ष-शोध-संस्थान, आध्रप्रदेश

सहायक ग्रन्थ: - वैदिक साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-103 - उपनिषद् परिचय – I

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- निर्दिष्ट उपनिषद् मन्त्रों का उच्चारण कराना।
- विविध उपनिषदों के अनुसार ईश्वर का स्वरूप को समझाना।
- उपनिषद् मन्त्रों से ईश्वर की उपासना प्रक्रिया को अवगत कराना।

इकाई 1 – ईश, केन एवं कठोपनिषदों के चयनित मन्त्र ()

इकाई 2 – प्रश्नोपनिषद् के चयनित मन्त्र ()

इकाई 3 – मुण्डक एवं माण्डुक्योपनिषदों के चयनित मन्त्र ()

इकाई 4 – तैत्तरेय एवं ऐतरेयोपनिषदों के चयनित मन्त्र ()

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे,

- निर्दिष्ट उपनिषद् मन्त्रों का उच्चारण करना।
- उपनिषद् मन्त्रों के अनुसार ईश्वर का स्वरूप को स्पष्ट करना।
- उपनिषद् मन्त्रों के माध्यम से ईश्वर की उपासना करना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: - एकादशोपनिषद, सत्यव्रत सिद्धालङ्कार

सहायक ग्रन्थ: - इशादि नौ उपनिषद, गीता प्रेस, गोरखपुर

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-104 - वैदिक दर्शन परिचय

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- वैदिक दर्शनों का महत्त्व एवं आवश्यकता को स्पष्ट कराना।
- वैदिक दर्शनों के प्रधान तत्वों को अवगत कराना।
- दर्शन निहित कर्मफलव्यवस्था का बोध कराना।
- दर्शन निहित ईश्वर, जीव, प्रकृति का यथार्थ बोध कराना।

इकाई 1 – योगदर्शन परिचय

इकाई 2 – सांख्यदर्शन परिचय

इकाई 3 – न्यायदर्शन परिचय

इकाई 4 – वैषेशिकदर्शन परिचय

इकाई 5 – वेदान्त-मीमांसादर्शन परिचय

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे,

- वैदिक दर्शनों का महत्त्व एवं आवश्यकता का विश्लेषण करना।
- षड्-दर्शनों के अनुसार विविध तत्वों को स्पष्ट करना।
- दर्शन निहित कर्मफलव्यवस्था को समझकर समाज में उत्तम व्यवहार को करना।
- दर्शन निहित ईश्वर, जीव, प्रकृति का यथार्थ बोध कराना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: - दर्शन प्रवेश, डॉ० साध्वी देवप्रिया जी, दिव्य प्रकशन, हरिद्वर

सहायक ग्रन्थ: -पातञ्जलयोगदर्शनम्, साङ्ख्यदर्शनम्, न्यायदर्शनम्, वैशेषिकदर्शनम्, वेदान्तदर्शनम्
(डॉ० साध्वी देवप्रिया जी, दिव्य प्रकशन, हरिद्वर)

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-105 - वैदिक संस्कृति परिचय – I

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- दैवीसम्पत एवं षड्क सम्पत्ति के बारे में अवगत कराना।
- पञ्चमहयज्ञ का महत्व के साथ उन्के धार्मिक, सामाजिक, और नैतिक दृष्टिकोण को समझाना।
- षोडशसंस्कार का परिचय कराना।
- पञ्चमहाव्रत का परिचय कराते हुए विद्यार्थियों को विविध प्रकार के उन्नति के मार्ग पर प्रेरित करना।

इकाई 1 – दैवीसम्पत एवं षड्क सम्पत्ति

इकाई 2 – पञ्चमहयज्ञ

इकाई 3 – षोडशसंस्कार

इकाई 4 – पञ्चमहाव्रत

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे,

- दैवीसम्पत एवं षड्क सम्पत्ति का बोध के साथ समाज मे प्रवृत्ति करना।
- पञ्चमहयज्ञ का महत्व को बताते हुए सभी से कराना।
- षोडशसंस्कार का विश्लेषण करना।
- पञ्चमहाव्रत को समझकर सत्य मार्ग पर चलना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: - गीतामृत, स्वामी रामदेव, दिव्य प्रकाशन

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली

वैदिक नित्य कर्म विधि,

सहायक ग्रन्थ: - यज्ञ-योग-आयुर्वेद चिकित्सा, परम पूज्य योगऋषि स्वामी रामदेव जी महराज, दिव्य प्रकाशन

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-201 - वेद परिचय – II

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- चारों वेदों के चयनित मन्त्रों का स्वर सहित उच्चारण कराना।
- वैदिक साहित्य के माध्यम से विविध विद्याओं को अवगत कराना।
- वेद मन्त्रों के स्वर व्यत्यय से अर्थ व्यत्यय का बोध कराना।
- लुप्त प्राय स्वर विद्या का बोध कराना।
- दस प्रकार के वेद पाठ विधि का बोध कराना।

इकाई 1 – ऋग्वेद के चयनित मन्त्र ()

इकाई 2 – यजुर्वेद के चयनित मन्त्र ()

इकाई 3 – सामवेद के चयनित मन्त्र ()

इकाई 4 – अथर्ववेद के चयनित मन्त्र ()

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे,

- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के उल्लिखित मन्त्रों का सस्वर उच्चारण करना।
- विविध मन्त्रों का अर्थ का विश्लेषण करना।
- वैदिक साहित्य के माध्यम से विविध विद्याओं का बोध।
- प्रामाणिक वेदवेत्ता बनकर वांछित अर्थार्जन में सक्षम होना।
- वेद मन्त्रों के स्वर व्यत्यय से अर्थ व्यत्यय का बोध।
- विविध प्रकार के वेद पाठ विधि का प्रयोग।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: - वेदामृत, डॉ० साध्वी देवप्रिया जी, दिव्य प्रकशन, हरिद्वर

सहायक ग्रन्थ: - ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-202 - वेदाङ्ग परिचय – II

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- छन्द का सामन्य परिचय के साथ प्रमुख छन्दों को समझाना।
- वेदार्थ करने में ज्योतिष्य का महत्व बताते हुए ज्योतिष्य शास्त्र का परिचय कराना।
- उपवेद का समान्य बोध कराना।
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार त्रिविध श्रद्धा का परिचय के साथ श्रद्धा को आत्मसात करने का उपाय को अवगत कराना।

इकाई 1 – छन्द परिचय

इकाई 2 – ज्योतिष्य परिचय

इकाई 3 – उपवेद परिचय

इकाई 4 – श्रद्धात्रयविभागयोग

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित कराने में सक्षम होंगे,

- प्रमुख छन्दों का सामन्य परिचय कराना।
- ज्योतिष्य का महत्व के साथ ज्योतिष्य शास्त्र का मूल विचार को बताना।
- उपवेद का समान्य विश्लेषण करना।
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार श्रद्धा का पालन करना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: - वेदाङ्ग-परिचय, आचार्य आनन्दप्रकाश, आर्ष-शोध-संस्थान, आध्रप्रदेश

गीतामृत, स्वामी रामदेव, दिव्य प्रकाशन

सहायक ग्रन्थ: - वैदिक साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-203 - उपनिषद् परिचय – II

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- निर्दिष्ट उपनिषद् मन्त्रों का उच्चारण कराना।
- विविध उपनिषदों के अनुसार ईश्वर का स्वरूप को समझाना।
- उपनिषद् मन्त्रों से ईश्वर की उपासना प्रक्रिया को अवगत कराना।

इकाई 1 – छान्दोग्योपनिषद् के चयनित मन्त्र ()

इकाई 2 – बृहदारण्यकोपनिषद् के चयनित मन्त्र ()

इकाई 3 – श्वेताश्वतरोपनिषद् के चयनित मन्त्र ()

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे,

- निर्दिष्ट उपनिषद् मन्त्रों का उच्चारण करना।
- उपनिषद् मन्त्रों के अनुसार ईश्वर का स्वरूप को स्पष्ट करना।
- उपनिषद् मन्त्रों के माध्यम से ईश्वर की उपासना करना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: - एकादशोपनिषद्, सत्यव्रत सिद्धालङ्कार

सहायक ग्रन्थ: - इशादि नौ उपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-204 - वैदिकेतर दर्शन परिचय

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- वैदिकेतरपरम्परा का सामान्य बोध एवं दार्शनिक सिद्धान्तों का परिचय कराना।
- निर्दिष्ट दर्शनों के रचयिता एवं उन्के उपदेशों से अवगत कराना।

इकाई 1 – बौद्धदर्शन परिचय

इकाई 2 – जैनदर्शन परिचय

इकाई 3 – द्वैतदर्शन परिचय

इकाई 4 – अद्वैतदर्शन परिचय

इकाई 5 – विशिष्टाद्वैतदर्शन परिचय

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे,

- वैदिकेतरपरम्परा का सामान्य परिचय एवं दार्शनिक सिद्धान्तों का विश्लेषण करना।
- जैन, बौद्ध, द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत दर्शनों के रचयिता एवं उन्के उपदेशों को स्पष्ट करना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: - सर्वदर्शन सङ्ग्रह, प्रो. उमाशङ्कर शर्मा, चौकाम्बा विद्या भावन, वाराणसी

सहायक ग्रन्थ: -

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम – वैदिक डिप्लोमा

VDPH-205 - वैदिक संस्कृति परिचय – II

Credits: 4

Marks: 70+30 = 100

उद्देश्य: -

- पंच कोशों के बारे में जागरूक कराना।
- पंच प्राण का महत्व एवं उन्की क्रिया के बारे में अवगत कराना।
- पञ्चमहाभूत के स्वरूप एवं गुणों को समझाना।
- चतुरवर्णाश्रमव्यवस्था का परिचय के साथ-साथ जीवन में

इकाई 1 – पञ्चकोश

इकाई 2 – पञ्चप्राण

इकाई 3 – पञ्चमहाभूत

इकाई 4 – चतुरवर्णाश्रमव्यवस्था

परिणाम: -

पाठ्यक्रम पूरा होने पर, शिक्षार्थी निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे,

- पंचकोश को स्पष्ट करना।
- पंचप्राण का महत्व एवं उन्की क्रिया को विश्लेषण करना।
- पञ्चमहाभूत को सप्रयोजन समझना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक: -

सहायक ग्रन्थ: - ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली